सूरदास
के भजन
DESIGNER

विषय-सूची

कहन लगे मैया

कहन लगे मोहन, मैया मैया ।
पिता नंदसों बाबा बाबा अरु हलधरसों भैया ।
ऊंचे चढ़ि चढ़ि कहत जसोदा लै लै नाम कन्हैया ॥
दूहि कहूं जिनि जाहु लला रे मारेगी काहूकी गैया ।
गोपी ग्वाल करत कौतूहल घर घर लेत बलैया ॥
मनिखंभन प्रतिबिंब बिलोकत नाचत कुंवर कन्हैया ।
नंद जसोदाजी के उरते इह छवि अनत न जइया ॥
सूरदास प्रभु तुमरे दरसको चरनन की बलि जैया ।

☆ ☆ ☆

संदेसो देवकी सों

संदेसो देवकी सों कहियो ।
हौं तो धाय तुम्हारे सुत की मया करत नित रहियो ॥
जदपि टेव तुम जानत उनकी तऊ मोहि कहि आवै ।
प्रातहिं उठत श्याम सुन्दर को माखन रोटी भावै ॥
तेल उबटनो अरु ताती जल, ताहि देखि भजि जावै
जोइ जोई मांगत सोइ सोइ देती क्रम क्रम करि करि न्हावै॥
सूर पथिक सुनि मोहि रैन दिन बढ़यो रहत उर सोच ।
मेरो ललित लडैतो मोहन ह्वै हे करत संकोच ॥
संदेसो देवकी सों कहियो ।

☆ ☆ ☆

बिनती जन कासों करे

बिनती जन कासों करै गुसाईं ।
तुम बिनु दीनदयालु, देवतन सब फीकी ठकुराई ॥
अपने से कर चरन नैन मुख अपनी-सी बुधि बाई ।
काल करम बस फिरत सकल प्रभु ते हमरी ही नाई ॥
पराधीन परबदन निहार मानत मोह बड़ाई ।
हंसे हंसै, बिलखै लखि पर दुख, ज्यों जलदर्पन झाई ॥
लियो दियो चाहै जो काऊ सुनि समरथ जदुराई ।
देव सकल व्यापार रित निज ज्यों पसु दूध चराई ॥
तुम बिनु और न कोउ कृपानिधि पावै पीर पराई ।
सूरदास के त्रास हरनको कृष्ण नाम प्रभुताई ॥

☆☆☆

क्यों न उबारो

अब मोहि भ्रीजत क्यों न उबारो ।
दीनबन्धु करुनामय स्वामी जन के दुःख निवारो ॥
ममता घटा, मोह की बूंदें, सरिता मैन अपारो ।
बूड़त कतहुं थाह नहिं पावत गुरुजन ओट अधारो ॥
.जन क्रोध, लोभी को नारो सूझत कहुं न उधारो ।
रसना तड़ित चमकि छिन ही छिन अह निसि यह तन जारो ॥

यह सब जल कलिमलहिं गहे हे बोरत सहस प्रकारो ।
सूरदास पतितन को संगी बिरदहिं नाथ सम्हारो ॥

☆☆☆

हरिसो मीत न

हरि सो मीत न देखौ कोई ।
अंतकाल सुमिरत तेहि अवसर आनि प्रतिच्छो होई ॥
ग्राह गहे गजपति मुकरायो हाथ चक्र लै धायो ।
तजि बैकुंठ गरुड़ तजि श्री तजि निकट दास के आयो ॥
दुरबासा को साप निवार्‌यो अंबरीष पति राखी ।
ब्रह्मलोक परजंत फिर्‌यों तहं, देव मुनीजन साखी ॥
लाखा गुहतें जरत पांडु-सुत बुधि बल नाथ उबारे ।
सूरदास प्रभु अपने जन के नाना त्रास निवारे ॥

☆☆☆

कृष्ण कहत कहा जात

तुम्हरो कृष्ण कहत कहा जात ।
बिछुरे मिलन बहुरि कब है है ज्यों तरवर के पात ॥
सीत वायु कफ कंठ विरोध्यौ रसना टूटी बात ।
प्रान लिये जम जात मूढ़ मति देखत जननी तात ॥
छिनु एक मांह कोटि जुग बीतत, पाछे नरक की बात ।
यह जग प्रीति सुआ सेमर ज्यों चाखत ही उड़ित जात ॥

जम की त्रास निकट नहिं आवत चरनन चित्त लगात ।
गावत सूर वृथा या देही इतनौ कत इतरात ॥

☆ ☆ ☆

राखे लाज हरी

तुम मेरी राखो लाज हरी ।
तुम जानत सब अंतरयामी, करनी कछु न करी ॥
औगुन मोते बिसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी ।
सब प्रपंच की पोट बांधि कै, अपने सीस धरी ॥
दारा-सुत-धन मोह लिये है, सुधि-बुधि सब बिसरी ।
सूर पतित को बेग उधारो, अब मेरी नाव भरी ॥

☆ ☆ ☆

नाच्यो बहुत गुपाल

अब मैं नाच्यो बहुत गुपाल ।
काम क्रोध पहिरि चोलना, कंठ विषय की माल ॥
महा मोह के नूपुर बाजत, निंदा शब्द की रसाल ।
भरम भर्‍यो मन भयो पखावज, चलत कुसंगत चाल ॥
तृष्ना नाद करत घट भीतर, नाना विधि दै ताल ।
माया को कटि फेंटा बाधयों लोभ तिलक दै भाल ॥
कोटिक कला काछि देखराई, जलथल सुधि नहीं काल ।
सूरदास की सबै की सबै अविद्या, दूर करौ नंदलाल ॥

☆ ☆ ☆

जैसेहि राखौ

जैसेहि राखौ तैसेहि रहौ ।
जानत हौ सब दुख-सुख जनकौ मुखकरि कहा कहौ ॥
कबहुंक भोजन देत कृपाकरि कबहुंक भूख सहौ ।
कबहुंक चढ़ौ तुरंग महागजे कबहुंक भार बहौ ॥
कमलनयन घनस्याम मनोहर अनुचर भयो रहौ ।
सूरदास प्रभु भगत कृपानिधि तुम्हरे चरन गहौ ॥

☆ ☆ ☆

बंदौ चरन सरोज

बंदौ चरन सरोज तुम्हारे ।
जे पदपदुम सदासिव के धन, सिंधुसुता उरतें नहिं टारे ॥
जे पदपदुम परसि भइ पावन, सुरसरि दरस कटत अघ भारे।
जे पदपदुम परसि ऋषि-पत्नी, बलि, नृग, व्याध-पतित बहुतारे ॥
जे पदपदुम रमत वृंदावन अहि सिर धरि अगनित रिपु मारे ।
जे पदपदुम परसि ब्रज भामिनि, सरबसु दै सुत सदन बिसारे ॥
जे पदपदुम रमत पांडव दल, दूत, भये सब काज संवारे ।
सूरदास तेई पदपंकज त्रिविध, ताप दुख हरन हमारे ॥

☆ ☆ ☆

अवगुन चित्त न धरो

प्रभु मेरे अवगुन चित्त न धरो ।
समदरसी प्रभु नाम तिहारो अपने पनहि करो ॥

इक लोहा पूजा में राखत इक घर बधिक परो ।
यह दुविधा पारस नहिं जानत कंचन करत खरो ॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो नीर भरो ।
जब मिलिकैं दोउ एक बरन भए सुरसरि नाम परो ॥
एक जीव इक ब्रह्म कहावत सूर स्याम झगरो ।
अब की बेर मोहि पार उतारो नहिं पन जात टरो ॥

☆☆☆

निरबल के बल

सुने री मैंने निरबल के बल राम ।
पिछली साख भरूं संतनकी, अड़े संवारे काम ॥
जब लगि गज बल अपना बरत्यो, नेक सर्‌यो नहिं काम ।
निरबल है बल राम पुकार्‌यो आये आधे नाम ॥
द्रुपद सुता निरबल भइ ता दिन, तजि आये निज धाम ।
दुस्सासन की भुजा थकित भई, बसन रूप भये स्याम ॥
अप-बल, तप-बल और बाहु-बल, चौथो है बल दाम ।
सूर किसोर-कृपातें सब बल, हारेको हरिनाम ॥

☆☆☆

छांड़ि हरि विमुखन को

छांड़ि मन हरि विमुखन को संग ।
जिनके संग कुबुधि उपजति है परत भजन में भंग ॥

कहा होत पय पान कराये, विष नहिं तजत भुजंग ।
कागहि कहा कपूर चुगाये स्वान नहाये गंग ॥
खरको कहा अरगजा-लेपन, मरकट भूषण अंग ।
गज को कहा न्हवाये सरिता बहुरि धरै खहि छंग ॥
पाहन पतित बांन नहिं बेधत, रीतो करत निषंग ।
सूरदास खल कारी कामरी, चढ़त न दूजो रंग ॥

☆☆☆

भगति बिन बैल

भगति बिनु बैल बिराने है हो ।
पांव चारि, सिर सींग, गूंग मुख, तब गुन कैसे गैहो ।
टूटे कंध सु-फूटी नाकनि, कौ लौ धौ भुस खैहो ॥
लादत जोतत लकुट बाजिहै, तब कहं मूड़ दुरैहो ।
सीता घाम घन विपति बहुत विधि, भार तरे मरि जैहौ ॥
हरि-दासन को कह्यौ न मानत, कियो आपनो पैहौ ।
सूरदास भगवंत भजन बिनु, मिथ्या जनम गंवैहो ॥

☆☆☆

मूरख जनम गंवायो

रे मन मूरख जनम गंवायो ।
कर अभिमान विषयसों राच्यों, नाम सरन नहि आयो ॥

यह संसार फूल सेमर को सुन्दर देखि लुभायो ।
चाखन लाग्यो रूई उड़ि गई, हाथ कछु नहिं आयो ॥
कहा भयो अबके मन सोचे, पहिले नाहिं कमायो ।
सूरदास हरि नाम-भजन बिनु सिर धुनि-धुनि पछितायो ॥

☆ ☆ ☆

जनम अकारथ जात

रे मन जनम अकारथ जात ।
बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वै है ज्यों तरूवर के पात ॥
सन्निपात कफ कंठ विरोधी, रसना टूटी जात ।
प्रान लिये जम जात मूढ़मति, देखत जननी तात ॥
छिन इक मांहि कोटि जुग बीतत फेरि नरक की बात ।
यह जग प्रीति सुआ सेमर की चाखत ही उड़ि जात ॥
जम के फंद नाहि परू बौरे, चरनन चित्त लगात ।
कहत सूर बिरथा यह देही, काहे को इतरात ॥

☆ ☆ ☆

दिन, हरि सुमिरन बिनु खोये

कितक दिन हरि सुमिरन बिन खोये ।
पर निंदा रस में रसना के सगरे परत डुबोये ॥
तेल लगाइ कियो रुचि मर्दन वस्त्रहिं मलि मलि धोये ।
तिलक लगाइ चले स्वामी बनि विषयनि के मुख जोयो ॥

काल बलीते सब जग कंपत ब्रह्मादिक हू रोये ।
सूर अधमकी कहौ कौन गति उदरि भरे पर सोये ॥

☆ ☆ ☆

जाके रामधनी

कहा कमी जाके रामधनी ।
मनसा नाथ मनोरथ-पूरन सुखनिधान जाकी मौज धनी ॥
अर्थ धर्म अरु काम मोच्छ फल, चार पदारथ देत छनी ।
इन्द्र समान है जाके सेवक मो बपुरेकी कहा गनी ॥
कहौ कृपन की माया कितनी करत फिरत अपनी अपनी ।
खाई न सकै खरच नहि जानै ज्यों भुजंग सिर रहत मनी ॥
आनंद मगन रामगुन गावै दुख संताप की काटि तनी ।
सूर कहत जे भजत राम को, तिन सों हरिसों सदा बनी ॥

☆ ☆ ☆

कबहिं बढ़ैगी चोटी

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी !
कित्ती बार मोहि दूध पिवत भई यह अजहूं है छोटी ॥
तू तो कहति बल की बेनी ज्यों ह्वै है लांबी मोटी ।
काढ़त गुहत न्हावत ओछति नागिन-सी ह्वै लोटी ॥
काचो दूध पिवावत पचि पचि दे न माखन रोटी ।
सूर स्याम चिरजिव दोउ भैया हरि-हलधर की जोटी ॥

☆ ☆ ☆

और कौन पे जाऊं

और कौन पे जाऊं ॥
काके द्वार जाइ सिर नाऊं, पर हथ कहां बिकाऊं ॥
ऐसो तो दाता है समरथ, जाके दिये अघाऊं ।
अंतकाल तुमरो सुमिरन गति, अनंत कहूं नहिं पाऊं ॥
रंक अयाची कियो सुदामा, दियो अभय पद ठाऊं ।
कामधेनु चिंतामनि दीनो, कलप वृच्छ तर छाऊं ॥
भवसमुद्र अति देखि भयानक, मन से अधिक डराऊं ।
कीजै कृपा सुमिरि अपनो पन, सूरदास बलि जाऊं ॥

☆ ☆ ☆

माधव मोहि उधारि

अबके माधव मोहि उधारि ।
मगन हौं भव-अंबु-निधि में कृपासिंधु मुरारि ॥
नीर अति गम्भीर माया, लोभ लहरि तरंग ।
लिये जात अगाध जल में गहे ग्राह अनंग ॥
मीन इंद्रिय अतिहि काटत मोट अघ सिर भार ।
पग न इत उत धरन पावन उरझि मोह सेवसार ॥
काम क्रोध समेत तृस्ना पवन अति झकझोर ।
नाहिं चितवन देत तिय सुत नाम नौका ओर ॥

थक्यों बीच बेहाल बिहबल सुनहु करुना मूल ।
स्याम भुज गहि काढ़ि डारहु सूर ब्रज के कूल ॥

☆ ☆ ☆

गोपालहि गाये

जो सुख होत गोपालहि गाये ।
सो नहि होत किये जप-तपके कोटिक तीरथ नहाये ॥
दिये लेत नहिं चारि पदारथ, चरन कमल चित लाये ।
तीनि लोक तृन सम करि लेखत, नंदनंदन उर आये ॥
बंसीवट वृंदावन जमुना तजि बैकुंठ को जाये ।
सूरदास हरिको सुमिरन करि, बहुरि न भव चलि आये ॥

☆ ☆ ☆

कृष्ण नाम कह लीजे

रे मन, कृष्ण नाम कहि लीजै ।
गुरु के वचन अटल करि मानो साधु समागम कीजै ॥
पढ़िये गुनिये भगति भागवत और कहा कथि कीजै ।
कृष्ण नाम बिनु जनमु बादिही बिरथा काहे कीजै ॥
कृष्ण नाम रस बह्यो जात है तृषावन्त ह्वै पीजै ।
सूरदास हरिसरन ताकिये जनम सफल करि लीजै ॥

☆ ☆ ☆

श्याम हमारे चोर

मधुकर स्याम हमारे चोर ।
मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयन की कोर ॥
पकरे हुते आन उर अंतर प्रेम प्रीति के जोर ।
गये छुड़ाय तोर सब बंधन दै गये हंसन अकोर ॥
उचक परो जागत निसि बीते तारे गिनत भई भोर ।
सूरदास प्रभु हत मन मेरो, सरबस लै गयो नंदकिशोर ॥

☆ ☆ ☆

बैरन भई कुंजै

बिनु गुपाल बैरन भई कुंजै ।
तब ये लता लगति अति सीतल,
अब भई विषम ज्वाल की पुंजै ॥
वृथा बहत जमुना, खग बोलत,
वृथा कमल फूलै, अलि गुंजै ।
पवन, पानि घनसार, सजीवनि,
दधि-सुत-किरनभानु भई भुंजै ॥
हे ऊधो कहियो माधवसों,
बिरह करत कर मारत लुंजै ।
सूरदास प्रभु को मग जोवत,
अंखियां भई बरन ज्यों गुंजै ॥

☆ ☆ ☆

बरसत नैन हमारे

निसिदिन बरसत नैन हमारे ।
सदा रहत पावस ऋतु हम पर, जबतें स्याम सिधारे ॥
अंजन थिर न रहत अंखियन में, कर कपोल भये कारे ।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूं, उर बिच बहत पनारे ॥
आंसू सलिल भये पग थाके, बहै जात नित सारे ।
सूरदास अब डूबत है ब्रज, काहे न लेत उबारे ॥

☆ ☆ ☆

प्रेम सगाई

सबसों ऊंची प्रेम सगाई ।
दुरजोधन के मेवा त्यागे, साग बिदुर घर खाई ॥
जूठे फल सबरीके खाये, बहु विधि स्वाद बताई ।
प्रेम के बस नृप सेवा कीन्ही आप बने हरि नाई ॥
राजसु, जग्य जुधिष्ठिर कीन्हों तामे जूंठ उठाई ।
प्रेम के बस पारथ रथ हांक्यो, भूलि गये ठकुराई ॥
ऐसी प्रीति बढ़ी वृंदावन, गोपिन नाच नचाई ।
सूर कूर इहि लायक नाहीं, कहं लगि करौं बड़ाई ॥

☆ ☆ ☆

सोई रसना

सोइ रसना जो हरिगुन गावै ।
नैनन की छवि यहै चतुरता, ज्यों मकरंद मुकुदहि ध्यावै ॥

निर्मल चित्त तौ सोई सांचो, कृष्ण बिना जिय और न भावै ।
स्त्रवनन की जु यहै अधिकाई, सुनि हरि कथा सुधारस प्यावै ॥
कर तेई जे स्यामहि सेवै, चरननि चलि वृंदावन जावै ।
सूरदास जैये बलि ताके, जो हरिजू सों प्रीति बढ़ावै ॥

☆ ☆ ☆

जसुमति अभिलाष

जसुमति मन अभिलाष करै ।
कब मेरो लाल घुटुरुन रेंगै कब धनी पग द्वैक धरै ॥
कब द्वै दंत दूध के देखौ कब तुतरे मुख बैन झरै ।
कब नंदहि कहि बाबा बोलै कब जननी कहि मोहि ररै ॥
कब मेरो अंचरा गहि मोहना जोइ-सोइ कहि मोसों झगरै ।
कबधौ तनक तनक कछु खैहै अपने करसों मुखहि भरै ॥
कब हंसि बात कहैगो मोसों छवि पेखत दुख दूरि टरै ।
स्याम अकेले आंगन छांडे; आपु गई कछु काज घरै ॥
एहि अंतर अंधबाइ उठी इक गरजत गमन सहित थहरै ।
सूरदास ब्रज लोग सुनत धुनि जो जहं तहं सब अतिहि डरै ॥

☆ ☆ ☆

दिल के दामनगीर

चले गये दिल के दामनगीर ।
जब सुधि आवे प्यारे दरसकी, उठत कलेजे पीर ॥

नटवर भेष नयन रतनारे, सुन्दर स्याम सरीर ।
आपन जाय द्वारका छाए, खारी नंदके तीर ॥
ब्रजगोपिन को प्रेम बिसार्‌या, ऐसे भई बेपीर ।
वृंदावन बंसीवट त्यागो, निरमल जमुना नीर ॥
सूर स्याम ललिता उठ बोली, आखिर जाति अहीर ॥

☆ ☆ ☆

ऊधो मोहि ब्रज बिसरत

ऊधों मोहि ब्रज बिसरत नाही ।
हंससुता की सुंदर कलरव अरु तरुवन की छाही ॥
वे सुरभी वे बच्छ दोहनी खिरक दुहावन जाही ।
ग्वालबाल सब करत कुलाहल नाचत गह-गह बाही ॥
यह मथुरा कंचन की नगरी मनि-मुक्ता जिहि माही ।
जबकि सुरत आवत वा सुख की जिया उमगत सुध नाही ।
अनगिन भांति करी बहु लीला जसुदा-नंद निबाही ।
सूरदास प्रभु रहे मह गह कह-कह पछिताही ॥

☆ ☆ ☆

ऊधौ इतनो कहियो

ऊधौ इतनो कहियो जाई ।
हम आवैंगे दोऊ भैया, मैया, जनि अकुलाई ॥

याको बिलम बहुत हम मान्यो, जो कहि पठियो धाई ।
वह गुन हमको कहा बिसरिहै, बड़े किये पय प्याई ॥
और जु मिल्यो नंद बाबसों, तो कहियो समुझाई ।
औरौ दुखी होन नहिं पावै, धवरी धूमरि गाई ॥
जद्यपि यहां अनेक भांति सुख, तदपि रह्यो न जाई ।
सूरदास देखै ब्रजवासिन, तवहि हियो हरखाई ॥

☆☆☆

ब्रज की बात

कहां लौं कहिये ब्रज की बात ।
सुनहु स्याम तुम बिनु उन लोगइ जैसे दिवस बितात ॥
गोपी गाई ग्वाल गोसुत वह मलिन बदन कृस गात ।
परमदीन जनु सिसिर हिमी हित अंबुजगन बिनु पात ॥
जा कहुं आवत देखि दूरते सब पूछति कुसलात ।
चल न देत प्रेम आतुर उर कर चरनन लपटात ॥
पिक चातक बन बसन न पावहि बायस बलिहि न खात ।
सूर श्याम संदेसन के डर पथिक न उहि मग जात ॥

☆☆☆

प्रीति की बलि जाऊं

ऐसी प्रीति की बलि जाऊं ।
सिंहासन तजि चले मिलन को सुनत सुदामा नाउं ॥

गुरु-बांधव अरु बिप्र जानि कै चरनन हाथ पखारे ।
अंकमाल दै कुसल बूझिके सिंहासन बैठारे ॥
अरधंगी बूझत मोहन को कैसे हितू तुम्हारे ।
दुर्बल हीन छीन देखतिहो पाउं कहां ते धारे ॥
संदीपन के हम औ, सुदामा पढ़े एक चटसार ।
सूर स्याम की कौन चलावै भक्तन कृपा अपार ॥

☆☆☆

अंखियां हरि दरसन की

अंखियां हरि दरसन की प्यासी ।
देख्यौ चाहत कमलनैन को, निसिदिन रहत उदासी ॥
केसर तिलक मोतिन की माला, वृंदावन के वासी ।
नेह लगाय त्यागि गये तृन सम, डारि गये गल-फांसी ॥
काहू के मन की जो जानत, लोगन के मन हांसी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिन, लैहों करवट कासी ॥

☆☆☆

काहू सुख न लह्यो

प्रीति करि काहू सुख न लह्यो ।
प्रीति पतंग करी दीपकसों, आपै प्रान दह्यो ॥
अलिसुत प्रीति कर जलसुतसों करि मुख मांहि गह्यो ।
सारंग प्रीति करी जो नादसों सन्मुख बान सह्यो ॥

हम जो प्रीति करी माधवसों बनते न कछू कह्यो ।
सूरदास प्रभु बिनु दुख दूनो नैननि नीर बह्यो ॥

☆☆☆

अंखियां हरि

अंखियां हरि दर्शन की भूखी ।
अब क्यों रहति श्याम रंग राती, ये बातें सुनि रूखी ॥
अवध गनत इक टक मग जोवत, तब ये इतो नहिं भूखी ।
इते मान इत जोग संदेसन, सुनि अकुलानी दूखी ॥
सूर सकत हठ नाव चलावत, ये सरिता हैं सूखी ।
बालक वह सुख आनि देखावहु, दुहि पय पियत पतूखी ॥

☆☆☆

हमें नंद नंदन

हमें नन्द-नंदन-मोल लियो ।
जम की फांसीकाटि मुकरायो अभय अजात कियो ॥
मूंड़ मुड़ाय कंठ वनमाला चक्र के चिन्ह दियो ।
माथे तिलक श्रवन तुलसीदल मेटेव अंग बियो ॥
सब कोउ कहत गुलाम श्याम को सुनत सिरात हियो ।
सूरदास प्रभुजू को चेरो जूठनि खाय जियो ॥

☆☆☆

हरिसों ठाकुर

हरि सो ठाकुर और न जनको ।
जेहि जेहि विधि सेवक सुख पावै, तेहि विधि राखत तिनको ।
भूखे बहु भोजन जु उदर को, तृषा तोय, पट तन को ।
लग्यो फिरत सुरभी ज्यों सुत संग,
परमउदार चतुर चिंतामन, कोटिकुबेर निधन को ।
राखत हैं जन की परतिज्ञा हाथ पसारत कन को ।
संकटपरै तुरत उठिधावत परम सुभट निजपन को ।
कोटिक करैं एक नहिं मानै, सूर महा कृतघन को ।

☆☆☆

तुम गोपाल

तुम गोपाल मोसो बहुत करी ।
नर देह दीन्हीं सुमिरन की,
मो पापी ते कछु न सरी ॥
गरभ-बास अति त्रास अधोमुख,
तहं न मेरी सुध बिसरी ।
पावक जठर जरन नहिं दीनों,
कञ्चन-सी मेरी देह करी ॥
जग में जनमि पाप बहु कीने,
आदि अंत लौ सब बिगरी ।

सूर पतित तुम पतित उधारन,
अपने विरद की लाज धरी ॥

☆ ☆ ☆

पतित पावन हरि

पतित पावन हरि बिरद तुम्हारो कौन नाम धर्यो ।
हौं तौ दीन-दुखित अति दुर्बल द्वारे रटत पर्यो ॥
चारि पदारथ दये सुदामहि तन्दुल भेंट धर्यो ।
द्रुपद-सुता की तुम पति राखी अम्बर दान कर्यो ॥
संदीपन सुत तुम प्रभु दीने विद्या पाठ कर्यो ।
सूर की बिरियां निठुर भये प्रभु मोत कछु न सर्यो ।

☆ ☆ ☆

प्रभु हौं सब पतितन

प्रभु हौं सब पतितन को राजा ।
परनिन्दा मुखपूरि रह्यो, जब यह निसान निज बाजा ॥
तृसना इसरु सुभेंट मनोरथ इन्द्रिय खड़ग हमारे ।
मंत्री काम कुमत देवे को क्रोध रहत प्रतिहारे ॥
गज अहंकार चढ़्यो दिग-विजया लोभ छत्रधरिसीस ।
फौज असत संगति की मेरी ऐसी ही में ईस ॥
मोह मदै बन्दी गुन गावत माधव दोष अगार ।
सूर पाप को गढ़ दृढ़ कीनों मुहकम कई किवार ॥

☆ ☆ ☆

तुम हरि सांकरे

तुम हरि सांकरे के साथी ।
सुनत पुकार परम आतुर है , दौरि छुड़ायो हाथी ॥
गर्भ परिच्छित रच्छा कीन्हीं वेद उपनिषद साखी ।
बसन बढ़ाय द्रुपद तनया कै, सभा मांझ पत राखी ॥
रोज रवनि गाई व्याकुल है, दै दे सुत का धीरक ।
मागध हति राजा सब छोरे, ऐसे प्रभु पर पीरक ॥
कटत स्वरूपधरायो जब कोटिक, नृप प्रतीतिकर मानी ।
कठिन परी तबही प्रभु प्रगटे, रिपु हति सब सुखदानी ॥
ऐसे कहां लौं गुन-गान लिखित अन्त नहिं पाइये ।
कृपा सिंधु उन्हीं के लेखे, मम लज्जा निरबाहिये ॥
सूर तुम्हारी ऐसे निबही, संकट के तुम साथी ।
ज्यों जानो त्यों करो दीन की, बात सकल तुम हाथी ॥

☆ ☆ ☆

है प्रभु मोहू ते

है प्रभु ! मोहू ते बड़ि पापी ।
घातक कुटिल चबाई कपटी मोह क्रोध संतापी ॥
लंपट भूत पूत दमरी कौ विषय जात नित जापी ।
काम विवस कामिनिही के रस, हठ करि मनसा थापी ॥
भच्छ अभच्छ अपै पीन को लोभ लालसा धापी ।
मन क्रम वचन दुसह सबहिन सों, कटुक वचन अलापी ॥

जेते अधम उधारे प्रभु तुम मैं तिन्हकी गतिमापी ।
सागर सूर विकार जल भरो, बधिक अजामिल वापी ॥

☆ ☆ ☆

मो सम कौन

मो सम कौन कुटिल खल कामी ।
जिन तनु दियो ताहि बिसरायो, ऐसो नमक हरामी ॥
भरि भरि उदर विषय को धायो, जैसे सूकर ग्रामी ।
हरि जन छांड़ि हरि विमुखन को, निस दिन करत गुलामी ॥
पापी कौन बड़ो जन मोतें, सब पतितन में नामी ।
सूर पतित को ठौर कहां है, तुम बिनु श्री पति स्वामी ॥

☆ ☆ ☆

नाथ जू

नाथ जू अबकै मोहि उबारो ।
पतितन में विख्यात पतित हौं पावन नाम तुम्हारो ॥
बड़े पतित नाहिन पासबहु अजामेलको जु विचारो ।
भाज नरक नाऊं मेरों सुनि जमहु देय हरि तारो ॥
छुद्रपतित तुम तारे श्रीपति अब न को जियगारो ।
सूरदास सांची तब माने जब होय मम निस्तारो ॥

☆ ☆ ☆

दीनानाथ अब

दीनानाथ अबें बार तुम्हारी ।
पतित उधारन बिगरी लेहु संभारी ॥
बालापन खेलत ही खोयो, जुबा विषय रस माते ।
वृद्ध भयो सुधि बिसरी मोको दुखित पुकारत ताते ॥
सुतनि तज्यो, तिय तज्यो, भ्रात तजि तनु त्वच भई जुन्यारी ।
श्रवन न सुनत चरन गति थाकी, नैन भये जल धारी ॥
पलित केस कफ-कंठ विरोध्यौ कल न परी दिन राती ।
माया मोह न छांड़े तृष्ना, ये दोऊ दुखदासी ॥
अब या व्यथा दूर करिबै को, और न समरथ कोई ।
सूरदास प्रभु करुना सागर, तुमते होई सो होई ॥

☆ ☆ ☆

नाथ मोहि

नाथ मोहि अबकी उबारो ।
तुम नाथन के नाथ सुस्वामी, दाता नाम तिहारो ॥
करम हीन जनम कौ अंधौ, मोते कौन नकारो ।
तीन लोक के तुम प्रतिपालक, मैं हूं दास तिहारो ॥
तारीजाति कुजाति श्यामसुत, मोपर किरपाधारो ।
पतितन में नायक कहिये, नीचन में सरदारों ॥
कोटि पाप इक पांसग मेरो, अजामिल कौन विचारो ।
नाठो धरम नाम सुनि मेरो, नरक दियो हठितारौ ॥

मोको ठौर नाहीं अबकोऊ, अपनी विरद सम्हारो ।
क्षुद्र पतित तुम तारे रमापति, अब न करो जिय गारो ॥
सूरदास सांचो तब माने, जो हैं मम निस्तारो ॥

☆ ☆ ☆

अबकी टेक

अबकी टेक हमारी लाज राखौ गिरधारी ।
जैसी लाज रखी पारथ की भारत युद्ध मंझारी ॥
सारथि होके रथ को हांक्यो चक्रसुदर्शन-धारी ।
भगत की टेक न टारी ॥
अबकी टेक हमारी लाज राखौ गिरधारी ।
जैसी लाज रखी द्रौपदी की होन न दीन उघारी ।
खैंचत खैंचत दोउ भुज थाके, दुस्सासन पचिहारी ।
चीर बढ़ायो मुरारी ॥
अबकी टेक हमारी लाज राखौ गिरधारी ।
सूरदास की लज्जा राखौ, अब को है रखवारी ।
राधे राधे श्रीवर प्यारी, श्रीवृशभानु दुलारी ।
सरनि तकि आयो तुम्हारी ॥
अबकी टेक हमारी लाज राखौ गिरधारी ।

☆ ☆ ☆

दीनन दुख

दीनन दुख हरन सन्तन सुखकारी ।
अजामिल गीध ब्याध, इनमें कहो कौन साध ॥
पंछीहू पद पढ़ात गनिका-सी तारी ।
ध्रुव के सिर छत्र देत, प्रहलाद कहं उतार लेत ॥
भगत हेत बांध्यो सेत, लंकापुरी जारी ।
तन्दुल देत रीझ जात, साग पात सों अघात ॥
गिनत नहीं जूठे फल, खाटे-मीठे खारी ।
गज को जब ग्राह ग्रस्यो, दुस्सासन चीर खस्यो ॥
सभा बीच कृष्ण-कृष्ण द्रोपदी पुकारी ।
इतने में हरि आइ गये, बसनन आरूढ़ भये ।
सूरदास द्वारे ठाढ़ो, आंधरो भिखारी ॥

☆ ☆ ☆

अब कैसे दूजे

अब कैसे दूजे हाथ बिकाऊं ।
मन-मधुकर कीनों वा दिन तें, चरन-कमल निज ठाऊं ॥
जो जानों और कोउ कर्ता, तऊ न मन पछिताऊं ।
जो जाको सोई सो जानै, अघ तारन नर नाऊं ॥
या परितीति हाये या जुग की, परिमित छूटत डराऊं ।
सूरदास प्रभु सिन्धु सरन तजि नदी सरन कत जाऊं ॥

☆ ☆ ☆

अबकी राख

अबकी राख लेहु भगवान ।
हम अनाथ बैठे द्रुम-डरियां, पारधि साध्यो बान ॥
ताके डर निकसन चाहत हैं, ऊपर रह्यो सचान ।
दुहूं भांति दुख भयो कृपानिधि, कौन उबारै प्रान ॥
सुमिरत ही अहि डस्यो पारधी, लाग्यो तीर सचान ।
सूरदास गुन कहं लग बरनौं, जै जै कृपा निधान ॥

☆ ☆ ☆

ताते तुमरो

ताते तुमरो भरोस आवै ।
दीना नाथ पतित पावन जस, वेद उपनिषद गावै ॥
जो तुम कहौ कौन खल तार्यो तौ हों बोलौं साखी ।
पुत्रहेतु हरिलोक गयो द्विज सक्यो न कोऊ राखी ॥
गनिका किये कौन व्रत संजम, सुक हित नाम पढ़ायौ ।
मनसो करि सुमिरयौ गजबापुरो ग्राह परमगति पायौ ॥

☆ ☆ ☆

जो तू राम-नाम

जो तू रामनाम चित धरतौ ।
अबको जन्म अगिलो तेरो दोऊ जन्म सुधरतौ ॥

जमकोत्रास सबैमिटि जातो, भक्तनाम तेरा परतौ ।
तंदुल धरत संवारि स्याम को संत परोसो करतौ ॥
हो तो नफा साधु की संगति मूल गांव ते टरतौ ।
सूरदास बैकुंठ पैठ मैं कोऊ न फैंट पकरतौ ॥

☆ ☆ ☆

जो सुख होत

जो सुख होत गोपालहिं गाये ।
सो नहिं होत किये जप तप के कोटिक तीरथ न्हाये ॥
दिये लेत नहिं चारि पदारथ, चरन-कमल चितलाये ।
तीनिलोक तृनसम करि लेखत नन्दनन्दन उर आये ॥
बंसीवट वृन्दावन जमुना, तजि बैकुंठ को जाये ।
सूरदासहरि को सुमिरन करि, बहुरि न भवचलि आये ॥

☆ ☆ ☆

जो पै राम

जो पै राम नाम धन धरतो ।
टरतौ नहीं जन्म जन्मान्तर कहा राज जम करतो ॥
लेतो करि व्योहार सबनि सों मूल गांव में परतो ।
भजन प्रताप सदाई घृत मधु, पावक परे न जरतो ॥

सुमिरन गान वेद विधि बैठा विप्र परोहन भरतो ।
सूर चलत बैकुण्ठ पेलिकै बीच कौन जौ अरतो ॥

☆☆☆

तुम्हारी कृपा

तुम्हारी कृपा गोविंद गुसाईं,
हौं अपने अज्ञान न जानत ।
उपजत दोष नयन नहिं सूझत,
रवि की किरन उलूक न मानत ॥
जब सुख निधि हरिनाम महामुनि,
सो पायो नाहिन पहिचानत ।
परम कुबुद्धि तुच्छ रस लोभी,
कौड़ी लगि सठ मग रज छानत ॥
सिव को धन संतन को सरबसु,
महिमा वेद पुरान बखानत ।
इते मान यह सूर महासठ,
परि-नग बदलि महा-खल आनत ॥

☆☆☆

जो हम भले बुरे

जो हम भले बुरे तौ तेरे ।
तुम्हीं हमारी लाज बचाई, विनती सुनु प्रभु मेरे ॥

सब तजि तुव सरनागत आयो, निजकर चरन गहेरे ।
तुव प्रताप-बल बदत न कांहू, निडर भये घर चेरे ॥
और देव सब रंक भिखारी, त्यागे बहुत अनेरे ।
सूरदास प्रभु तुम्हरि कृपा तें पाये सुख जु घनेरे ॥

☆☆☆

करी गोपाल की सब...

करी गोपाल की सब होई ।
जो अपनी पुरुषारथ मानत अति झूठी है सोई ॥
साधन मंत्र यंत्र उद्यम बल, यह सब डारहु धोई ।
जो कछु लिखि राखी नंदनंदन, मेटि सकै नहिं कोई ॥
दुख-सुख लाभ-अलाभसमुझितुम कतहि मरतहौंरोई ।
सूरदास स्वामी करुनामय, श्याम चरन-मन पोई ॥

☆☆☆

अपने को न आदर देय

अपने को न आदर देय ।
ज्यों बालक अपराध कोटि करैं मात न मारै सोय ॥
ते बेली कंसी दहियत हे तो अपने रस भेय ।
श्रीशंकर बहु रतन त्यागि के विषहि कंठ लपटेय ॥

माता अछत छीर बिन सुत मारे अजाकंठ कुच सेय ।
जद्यपि सूर महानपतित है पतितपावन तुम तेय ॥

☆ ☆ ☆

हरि हौं

हरि हौं बड़ी बेर को ठाड़ो ।
जैसे और पतित तुम तारे, तिनहिं न संह् लिखि काढ़ो ॥
जुट-जुट बरद यही चलि आयो, कहत टेर हौं ताते ।
मरियल लाज पंच पतितन में, हौं घर कहो कहां तै ॥
कै अब हार मानि कर बैठो, कै करु बिरद सही ।
सूर पतित जो झूठ कहत है, देखो खोलि बही ॥

☆ ☆ ☆

अपनी भगति दे...

अपनी भगति दे भगवान ।
कोटि लालच जो दिखावहु, नाहिनै रुचि आन ॥
जरत ज्वाला, गिरत गिरिते, स्व कर काटत सीस ।
देखि साहस सकुचि मानत राखि सकत न ईस ॥
कामना करि कोप कबहू करत करपसु घात ।
सिंह सावक जात गृह तजि, इन्द्र अधिक डरात ॥
जा दिना तें जनमु पायौं यहै मेरी रीति ।
विषम विष हठि खाति नाहीं डरत करत अनीति ॥

नर कृपनि जाइ जमपुर परयो बार अनेक ।
महा माचल मारिबे की सकुच नाहिन मोहि ॥
परयो हौं पन किये द्वारे लाज पन की तोहि ।
नाहिनै कांचो कृपानिधि करौ कहा रिसाई ॥
सूर कबहूं न द्वार छाड़े डारिहौं कढ़राई ॥

☆ ☆ ☆

अब मोहि भीजत...

अब मोहि भीजत क्यों न उबारो ।
दीनबन्धु करुनामय स्वामी उनके दुःख निवारो ॥
ममत घटा, मोह की बूंदें; सरित मैं न अपारो ।
डूबत कतहुं थाह नहिं पावत गुजरन ओट उबारो ॥
मरजन क्रोध, लोभ को नारो सूझत कहुं न अधारो ।
तृना तड़ित चमकि छिन ही छिन, अहिं निसि यह तन जारो ॥
यह सब जल कलिमल हि गहे है बोलत सहज प्रकारो ।
सूरदास पतितन को संगी विरदहिं नाथ सम्हारो ॥

☆ ☆ ☆

ऐसो कब करिहो...

ऐसो कब करिहो गोपाल ।
मनसा नाथ मनोरथ दाता मैं प्रभु दीन दयाल ॥

चित्त निरंतर चरनन अनुरत रसना चरित रसाल ।
लोचन सजल प्रेमपुलकित तनकरकतजनि दममाल ॥
ऐसे रहत लिखै छिनु-छिनु जम अपनौ भायो जाल ।
सूर सुजस रोगी न डरत मन नित जातना कराल ॥

☆☆☆

ऐसे प्रभु अनाथ के

ऐसे प्रभु अनाथ के स्वामी ।
कहिअत दीन दास पर-पीरक सब घट अन्तरजामी ॥
करत बिवस्त्र द्रुपद तनया को सरन शब्द कहि आयो ।
पूर्ण अनत कोट परिवसननि अरि को गरब गवायो ॥
सुतहित बिप्र की रहित गनिका, परमारथ प्रभुपायो ।
छन चितवन साप संक ते गज ग्राह तैं छुड़ायो ॥
तव तव पदनदेखि अविगत को जबलगि वेषबनायो ।
जे जन दुखी जानि भये ते रिपुहित-सुख उपजायो ॥
तुम्हारी कृपा जदुनाथ गुसाईं किहि न आसा पायो ।
सूरदास अंध अपराधी सो काहे बिसरायो ॥

☆☆☆

जैसेहि राखौ

जैसेहि राखौ वैसेहि रहौं ।
जानत हो सब दुखसुख जन कौ मुखकरि कहा कहौं ।

कबहुंक भूख सहौं ।
कबहुंक चढ़ौं तुरंग महागज कबहुंक भार बहौं ॥
कमलनयन घन स्याम मनोहर अनुचर भयो रहौं ।
सूरदास प्रभु भगत कृपानिधि तुम्हरे चरन गहौं ॥

☆☆☆

कौन गति करिहौ

कौन गति करिहौ मेरी नाथ ।
हौं तो कुटिल कुचाल कुदरसन रहत विषय के साथ ॥
दिन बीतत माया के लालच कुल कुटुम्ब के हेतु ।
सारी रैन नींद भरे सोवत जैसे पशु सचेत ॥
कागद धरनि करै द्रुम लेखनि जल सायर मसि घोर ।
लिखैं गनेश जनम भरि ममकृत तऊ दोष नहिं ओर ॥
गज गनिका अरुविप्रअजामिल अगनित अधम उधारे ।
अपथै चलि अपराध करे मैं तिनहुं ते अति भारे ॥
लिख लिख मम अपराध जनम के चित्रगुप्त अकुलायो ।
भृगुऋषि आदि सुनत चकित भये जमसुनिसीसडुलायो ॥
परम पुनीत पवित्र कृपानिधि पावन नाम कहायो ।
सूर पतित जब सुन्यो बिरद यह तब धीरज मन आयो '

☆☆☆

रे मन कृष्ण

रे मन कृष्ण नाम कहि लीजै ।
गुरु के वचन अटल करि मानहि, साधु समागम कीजै ॥
पढ़िये सुनिये भगति भागवत, और कहा कथि कीजै ।
कृष्णनाम बिनु जनमु बादिही, बिरथा काहे जीजै ॥
कृष्ण नाम-रस बह्यो जात है, तृषावन्त है पीजै ।
सूरदास हरिसरन ताकिये, जन्म सफल करि लीजै ॥

☆ ☆ ☆

हे हरि नाम

हे हरि नाम को आधार ।
और या कलिकाल नाहिन, रह्यो विधि-त्यौहार ॥
नारदादि सुकादि संकर, कियो यहै विचार ।
सकल स्त्रुति-दधिमयत पायो, इतो यह घृतसार ॥
दसहुदिसि गुन करम रोक्यो, मीन को ज्यों जार ।
सूर हरि के भजन-बलतें, मिट गयो भव-भार ॥

☆ ☆ ☆

तुम कब मोसो

तुम कब मोसो पतित उबार्यो ।
काहें को प्रभु विरद बुलावत बिनमसकत को तार्यो ॥

गीध व्याध पूतना जो तारी तिन पर कहा निहोरी ।
गनिका तरी आपनी करनी नाम भयो प्रभु तोरो ॥
अजामिल द्विज जनम जनम को हुती पुरातन दास ।
नेक चूकतें यह गति कीन्ही पुनि बैकुंठहि बास ॥
पतित जानिकैं सब जन तारे रही न काहू खोट ।
तौ जानों जो मोकहं तारो सूर कूर कवि ढोट ॥

☆ ☆ ☆

हरि हौं सब

हरि हौं सब पतितन को राव ।
को करि सकै बराबरि मेरो सो तैं मोहि बताव ॥
व्याध गीध अरु पतित पूतना तिनमहं बढ़िजौ और ।
तिन में अजामिल गनिका पतित, इनमें मैं सिरमौर ॥
जहं-तहं सुनयत यहै बड़ाई, मो समान नहिं आन ।
अब रहे आजु कलि के राजा, मैं तिनमें सुलतान ॥
अबलौं मो तुम विरद बुलाओ, भई न मोसो भेंट ।
तजौ विरद कै मोहिं उधारो, सूर गही कसि फेंट ॥

☆ ☆ ☆

हरि हौं सब

हरि हौं सब सब पतितन को नायक ।
को करि सकै बराबरि मेरी और नहीं कोउ लायक ॥

जैसी अजामिल को दीनों, सोइ पतो लिखि पाऊं ।
तौ विश्वास होई मन, औरों पतित बुलाऊं ॥
यह मारग चौगुनी चलाऊं, तो पूरो व्योपारी ।
वचन मानिल चली गांठि दै, पाऊं सुख अति भारी ॥
यह सुनि जहां तहां ते सिमटै, आइ होंइ इक ठौर ।
अबकी तौ अपनौ ले आयो, बेरि बहुरि को और ॥
होड़ा होड़ी मन हुलसा करि, किये पाप भरि पेट ।
सबै पतित पांयन तर डारौ, उहै हमारी भेंट ॥
बहुत भरोसो जानि तुम्हारो, अब कीन्हें भरि भांड़ो ।
लीजै नाथ निबेर तुरतहि, सूर पतित को टांड़ों ॥

☆ ☆ ☆

भजु मन

भजु मन चरन संकट हरन ।
जिस मन संकर ध्यान लावत गिम असरन सरन ॥
सेस सारद कहैं नारद सन्त वितत चरन ।
पद पराग प्रताप दुरलभ रमा को हित करना ॥
परसि गंगा भई पावन तिहूं पुर उद्धरन ।
चित्त चेतन करत, अन्तःकरन तारन तरन ॥
गये तरि लै नाम केते सन्त हरिपुर धरन ।
जासु पदरज परसि गौतम-नारि गति उद्धरन ॥

जासु महिमा प्रगट कहत न धोई पग सिर धरन ।
कृष्ण पद मकरंद पावत और नहिं सिर परन ॥
सूर प्रभु चरनारविन्द ते मिटै जन्मरु मरन ।

☆ ☆ ☆

सबै दिन

सबै दिन नाहिं एक से जात ।
सुमिरन ध्यान कियो करि हरि को, जब लगि तन कुसलात॥
कबहूं कमला चपला पाके, टेड़े टेड़े जात ।
कबहूं भग-मग धूरि टटोरत, भोजन को बिलखात ॥
या देही के गरब बावरो, तदपि फिरत इतरात ।
वाद-विवाद सबै दिन बीते, खेलत ही अरु खात ॥
हौं बड़ बहुत कहावत सूधे करत न मुख ते बात ।
जोग न जुगुति ध्यान नहिं पूजा, वृद्ध भये अकुलात ॥
बालापन खेलत ही खोयो, तरुनापन अलसात ।
सूरदास अवसर के बीते, रहिहौ पुनि पछितात ॥

☆ ☆ ☆

सरन गये

सरन गये को कौन उबार्‌यो ?
जब जब भीर परी भगतन पै,
चक्र सुदर्शन तहां संभारयो ॥

भयो प्रसन्न जु अम्बरीष पै,
दुरबासा को क्रोध निवारयो।
ग्वालन हेतु धारयो गोवर्धन,
प्रगट इन्द्र का गर्व प्रहारयो ॥
करी कृपा प्रहलाद भगत पै,
खंभ फारि उर नखन विदारयो।
नहरिरूप धरयो करुना करि,
छिनक मांहि हिरनाकुश मारयो।
ग्राह ग्रसित गज को जल डूबत,
नाम लेत तुरतैं दुख टारयो।
सूर स्याम बिनु और करै को,
रंगभूमि में कंस पछारयो ॥

☆☆☆

माधव मोहि

माधव मोहि काहे की लाज ?
जनम जनम है रहा मैं ऐसी अभिमानी के काज ॥
कोटिक कर्म किये करुनामय था देही के साज।
निसिवासर विषया रसरुचितें कबहू न आयो बाज ॥
बहुत बार जल थल जगजाओ श्रम आयो दिन देव।
अब अनखाय कहाँ घर अपने राखो बांधि बिचारि।
सूर श्याम के पालनहारे लावत हैं दिन चारि ॥

☆☆☆

सोई भलो

सोई भलो जो रामहि गावै।
स्वपच प्रसन्न होइ बड़ सेवक,
बिन गोपाल द्विज जन्म न भावै ॥
वाद-विवाद यज्ञ व्रत साधै,
कतहूं जाई जन्म डहकावै।
होइ अटल जगदीश भजन में,
सेवा तासु चारि फल पावै ॥
कहूं ठौर नहिं चरन कमल बिनु,
भृंगी ज्यों दसहूं दिसि धावै।
सूरदास प्रभु संत समागम,
आनन्द अभय निसान बजावै ॥

☆☆☆

जा दिन मन

जा दिन मन पंछी उड़ जैहैं।
ता दिन तेरे तन-तरुवर के सबै पात झरि जैहैं ॥
घर के कहिहै बेगाहि काढ़ो, भूत भये कोउ खैहैं।
जा प्रीतम सो प्रीति घनेरी, सोऊ देखि डरैहैं ॥
कहं वह ताल कहां वह शोभा, देखत धूरि उड़ैहैं।
भाइ बन्धु कुटुम्ब कबीला, सुमिरि सुमिरि पछितैहैं ॥

बिना गोपाल कोऊ नहिं अपनो, जस कीरति रहि जैहैं ।
सो तो सूर दुर्लभ देवन को, सत संगति महं पैहैं ॥

☆ ☆ ☆

जसोदा हरि

जसोदा हरि पालने झुलावै ।
हलरावै दुलराइ मल्हावै जोई सोई कछु गावै ॥
मेरे लाल को आस निदरिया काहे न आनि सुझावै ।
तू काहे न बेगि-सी आवै तोको कान्ह बुलाइवै ॥
कबहु पलक हरि मूंदि लेत हैं कबहुं अधर फरकावै ।
सोवत जाति मनौह्वै रहि-रहि करि-करि सैन बतावै ॥
इति अंतर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरै गावै ।
जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ नंदभामिनी पावै ॥

☆ ☆ ☆

जागिये ब्रजराज

जागिये ब्रजराज कुंवर कमल कुसुम फूले ।
कुमुद वृन्द संकुचित भये भृंग लता फूले ॥
तम चर खग रौर सुनत बोलत बनराई ।
रांभति गो खरिकन में बछरा हित धाई ॥
बिधु मलीन रवि प्रकाश गावत नर-नारी ।
सूर श्याम प्रात उठौ अंबुज कर धारी ॥

☆ ☆ ☆

आपुनपो आपुन

आपुनपो आपुन ही बिसर्‌यो ।
जैसे स्वान कांच मन्दिर में, भ्रम-भ्रम भूल मरयो ॥
हरि सौरभ मृग नाभि **बसतु है**, द्रुम तृन सूंधि मरयो ।
ज्यों सपने में रंक **भूप भयो**, तसकरि और पकरयो ॥
ज्यों केहरि प्रति**बिंब देखिकै**, आपन कूपन कूद पर्‌यो ।
ऐसे गज लखि **फटकि-शिला** में, दसनन जाइ अर्‌यो ॥
मरकट मूंठि छांड़ि नहिं दीनी, घर घर द्वार फिर्‌यो ।
सूरदास नलिनी को सुवटा, कहि कौनै जकर्‌यो ॥

☆ ☆ ☆

तबहीं तैं हरि

तबहीं तैं हरि हाथ बिकानी,
देह गेंह सुधि सबै भुलानी ।
अंग सिथिल भये जैसे पानी,
ज्यों त्यों करि गृहे पहुंचो आनी ॥
बोले तहां अचानक बानी,
द्वारे देखे स्याम बिनानी
कहा कहां, सुनि सखी सयानी,
सूर स्याम ऐसी मति ठानी ।

☆ ☆ ☆

को जानै

को जानै हठि कहा कियौ री ।
मन समुझति मुख कहत न आवे,
कछु इक रस नैनन जु पियौ री ॥
ठाढ़ी हुती अकेली आंगन आनि,
अचानक दरस दियौ री ।
सुधि बुधि कछु न रही चितवत,
मेरो मन उन्हें पलटि लियो री ॥
ता सुख हेतु दहत दुख दारुन,
छिन छिन जरत जुड़ाय हियौ री ।
सूर सकल आनति उर अन्तर,
उपमा को पावति न बियौ री ॥

☆ ☆ ☆

जब तैं प्रीति

जब तैं प्रीति स्याम सौं कीन्हीं ।
ता दिनतैं मेरे इन नैनन नेकहुं नींद न लीन्हीं ॥
सदा रहैं मन काम चढ़्यौ और न कछू सुहाइ ।
करत उपाय बहुति मिलबेकौ, यहैं विचारत जाइ ॥
सूर सकल लागति ऐसो, ऐसो कासौं कहियो ।
ज्यों अचेत बालक की वेदन अपने ही तन सहियो ॥

☆ ☆ ☆

नहु मैं घटताई

नहु मैं घटताई कीन्हीं ।
रसना स्त्रवन नैन के होते,
कै रसना ही इनकी दीन्हीं ॥
बैर कियौ हम सौ विधिना रचि,
याकी जाति अबै हम चीन्ही ।
निठुर निरदई यातैं और न,
स्याम बैर हम सो है लीन्हीं ॥
या रस ही में मगन राधिका,
चतुर सखी तबहो लखि लीनी ।
सूर स्याम के रंगै रांची,
टरति नाहिं जल तैं ज्यों मीनी ॥

☆ ☆ ☆

रे मन जन्म

रे मन जन्म अकारथ जात ।
बिछरे मिलन बहुरि कबह्वै हैं, ज्यों तरुवर के पास ॥
सन्निपात कफ कंठ विरोधी, रसना टूटी जात ।
प्रान लिये जमजात मूढ़मति, देखत जननी तात ॥
छिन इक मांहि क्रोटि जुग बीतत, फेरि नरक की बात ।
यह जगप्रीति सुआसेमर की चाखत ही उड़िजात ॥

जम के फन्द नहीं पड़ बौरे, चरनन चित्त लगात ।
कहत सूर बिरथा यह देही, अंतर, क्यों इतरात ॥
☆ ☆ ☆

सबै दिन गये विषय

सबै दिन गये विषय के हेत ।
तीनों पन ऐसे ही बीते, केश भये शिर सेत ॥
अंखियन अंध श्रवन नहिं सुनियत, थाके चरन समेत ।
गंगाजल तजि पियत कूप जल, हरि तजि पूजत प्रेत ॥
राम नाम बिनु क्यों छूटोगे, चन्द्र गहे ज्यों केत ।
सूरदास कछु खरच न लागत, रामनाम मुख लेत ।
☆ ☆ ☆

भजन बिनु

भजन बिनु कूकर सूकर जैसे ।
जैसे घर बिलाव के मूसा, रहत विषय-बस तैसो ॥
बकी और बक गीध गीधनी, आइ जनम लिय वैसो ।
उनहू के ये सुत दारा हैं, इन्हें भेद कुछ कैसो ॥
जीव मारिके उदर भरत हैं, तिनके लेखे ऐसो ।
सूरदास भगवन्त भजन बिनु, मनो ऊंट खर भैसों ॥
☆ ☆ ☆

हरि बिनु

हरि बिनु कौन दरिद्र हरै ।
कहत सुदामा सुन सुंदरि जिय मिलन न हरि बिसरै ॥
और मित्र ऐसे कुसमै कहं कत पहिचान करै ।
विपत परे कुशलात न बूझै, बात नहीं उचरै ॥
उठि के मिले तन्दुल हम दीन्हें, मोहन वचन फुरै ।
सूरदास स्वामी की महिमा, विधि टारी न टरै ॥
☆ ☆ ☆

अजहू सावधान

अजहूं सावधान किन होहि ।
मायाविषम भुजंगिनी को विषउर्यो नाहिन तोहि ॥
कृष्ण सुमंत्र सुद्धबन मूरी जिहि जन मरत जिवायो ।
बार-बार स्त्रवनन समीप होई गुरु गारुड़ी सुनायो ॥
जाग्यो मोह मेर मरि छूटि सुजत गीत के गाये ।
सूर गई सग्यान मूरछा ग्यान सुभे सज खाये ॥
☆ ☆ ☆

ऐसी करत अनेकन

ऐसी करत अनेकन जनम गये,
मन सन्तोष न पांयो ।

दिन दिन अधिक दुरासा लागी,
सकल लोक फिरि आयो ॥
सुनि स्वर्ग रसातल भूतल,
तहीं तहीं उठि धायो।
काम क्रोध मद लोभ अगिन ते,
जरत न काहु बुझायो ॥
स्त्रक चन्दन बनिता, विनोद सुख,
यह जर जरत बितायो।
मैं अजान अकुलाइ अधिक लै,
जरत मांझ घृत नायो ॥
भ्रमति ही हरयो हिय अपने,
देखि अनल जग चायो।
सूरदास प्रभु तुम्हरि कृपा बिनु,
कैसे जात बतायो ॥

☆☆☆

कितक दिन हरि

केतक दिन हरि सुमिरन विनु खोये।
र निन्दा रस में रसना के, अपने पर परत डुबोये ॥
ल लगाइ कियो रुचि मर्दन वस्त्रहि मलि मलि धोये।
लकलगाइ चले स्वामी बनि विषयनि से मुख जोये ॥

काल बली ते सब जग कांपत ब्रह्मादिक हू रोये।
सूर अधम की कहौ गति उदर भरे पर सोये।

☆☆☆

मो सम पतित

मो सम पतित न और गुसाई !
औगुन मोंते अजहुं न छूटत, भली तजी अब ताई।
जनम-जनम योंही भ्रम आयो, कपि कुंजर की नाई।
परसन सीत जात नहिं क्यों हू, लै लै निकट बनाई ॥
मोह्यो जाइ कनक कामिनि सों, ममता मोह बढ़ाई।
रसना स्वाद मीन ज्यों उरझो सूझत नहिं फंदाई ॥
सोवत मुदित भयो सुपने में, पाई निधि जो पराई।
जागि परयो कछु हाथ न आयो, यह जग की प्रभुताई ॥
परसे नाहिं चरन गिरधर के, बहुत करी अनिआई।
सूर पतित को ठौर और नहिं राखि लेव सरनाई ॥

☆☆☆

हम भगतन के भगत

हम भगतन के भगत हमारे।
सुन अरजुन परतिग्या मोरी यह व्रत टरत न टारें ॥
भगतन काज लाज हिय धरिके पांय पियादे धायौ।
जहं-जहं भीर परे भगतन पै तहं तहं होत सहायौ ॥

जो भगतन सों बैर करत हैं सों जन निज बैरी मेरो ।
देख बिचार भगत-हित कारन हांकत हौं रथ तेरो ॥
जीत जीत भगत अपने कौं हारे हार विचारों ।
सूर श्याम जो भगत विरोधी चक्र सुदर्शन मारों ॥

☆ ☆ ☆

जाको मनमोहन

जाको मनमोहन अंग करै ।
ताको केस खसै नहिं सिर तें जो जग बैर परे ॥
हिरनकसिपु परहारि थक्यो प्रहलाद न नेकु डरै ।
अजहू सुत उत्तानपाद को राज करत न टरै ॥
राखी लाज द्रुपद तनया को कुरुपति चीर हरै ।
दुर्योधन का मान भंग करि बसन प्रवाह भरैं ॥
विप्र भगत नृपअवध कूप दियो, बलि पढ़ि वेद छरैं ।
दीनदयालु कृपालु दयानिधि कापें कपो परैं ॥
जब सुरपति कोप्यो ब्रज ऊपर काहिहु कछु न सरैं ।
राखे ब्रज जन नन्द के लाला गिरधर बिरद धरैं ॥
जाको बिरद है गरब प्रहारी सो कैसे बिसरे ।
सूरदास भगवन्त भजन करि, सरन गहें उबरे ॥

☆ ☆ ☆

अब समझी

अब समझी यह निठुर विधाता ।
ऐसेहिं जगत पिता कहावत,
ऐसे धात करै सो धाता ॥
कैसे ज्ञान चतुराई कैसी,
कौन विवेक, कहा को ग्याता ।
जैसो दुःख हम कौं इति दीन्हौं,
तेसौ याकी होई निपाता ॥
द्वै लोचन तन मैं करि कीन्हें,
याही तै जान्यौं पित माता ।
सूर श्याम छवि ते अघात नहिं,
बार-बार आवत अकुलाता ॥

☆ ☆ ☆

द्वै लोचन

द्वै लोचन सावित नहिं तेऊ ।
बिना देखे कल परति नहीं छिन,
एते पर कीन्हीं यह टेक ॥
बार बार छवि देख्यौ ई चाहत,
साथी निमिष मिले हैं येऊ ॥

ते तौ ओट करत छिनहीं छिन,

देखत ही भरि आवत द्वेऊ ॥

कैसे मैं उनकौं पहचानौं,

नैन बिना लखिए क्यों भेऊ ।

ये तौ निमिष परत भरि आवत,

निठुर विधाता दीन्है जेऊ ॥

कहा भई जौ मिली स्याम सौं,

तू जाने, जाने सब केऊ ।

सूर स्याम कौ नाम स्रवन सुनि,

दरसन नीकैं देत न वेऊ ॥

☆ ☆ ☆

स्यामै मैं

स्यामै मैं कैसे पहचानौं ।

क्रम क्रम करि करि अंग निहारति,

पलक ओट ताकों नहि जानौं ॥

पुनि लोचन ठहराई निहारत,

निमिषमेटि वह छवि अनमानौं ।

औरे भाव और कछु शोभा,

कहौ सखी ! कैसे उर आनौं ॥

छिनि छिनि अंग-अंग छवि अगनित,

पुनि देखौं, फिर कै हठ ठानौ ।

सूरदास स्वामी कै महिमा,

कैसे रचना चक बखानौं ॥

☆ ☆ ☆

स्याम सौं काहे

स्याम सौं काहे की पहचानि ।

निमिष निमिष वह रूप, न वह छवि,

रति कीजे जिय जानि ॥

इकटक रहत निरन्तर निस दिन,

मन बुधि सौं चित सानि ।

एकौ पल सोभा की सींवां,

सकति न उर मैं आनि ॥

समझि न परै प्रगटहीं,

निरखति आनंद को निधि खानि ।

सखि यह विरह संजोग कि सम रस,

सुख दुख, लाभ कि हानि ॥

मिटति न घृत तैं होम अगनि रुचि,

सूर सु लोचन बानि ।

इति लोभी, उत रूप परम निधि,

कोउ न रहत मिति मानि ॥

☆ ☆ ☆

लालन हौं बारी

लालन हौं बारी तेरे या मुख ऊपर ।
माई मोरिहि डीठि न लागै,
तातै मसि दाबि दयो भ्रू पर ॥
सर्वसु मैं पहिले ही दीनी,
नान्हीं दंतुली ऊपर ।
अब कहां करौं निछावरि,
सूर जसोमति अपने लालन ऊपर ॥

☆☆☆

कहा करौं तीकैं

कहा करौं तीकैं करि हरि कौ,
रूप देख नहिं पावत !
संगहि संग फिरति निसि वासर,
नैन निमेष न लावति ॥
बंधी दृष्टि ज्यौं गुडी डोर,
बस पाछे लागो धावति ।
निकट भये मेरी ये छाया,
मोकौ दुख उपजावति ॥

नख सिख निरखि निहारयो चाहति,
मन मूरति अति भावति ।
जानति नाहिं कहां तैं निज छवि,
अंग अंग में आवति ॥
अपनी देह आप को बैरिन,
दुरति न दुरी दुरावति ।
सूर स्याम सौं प्रीति निरन्तर,
अन्तर मोहि करावति ॥

☆☆☆

जौ देखबौ तौ प्रीत

जौ देखबौं तौं प्रीत करौं री ।
संगे रहौ, फिरौं निसि वासर,
चित्त में एक नाहिं विसरौं री ॥
कैसे दुरत दुराएं मेरे,
उन बिन धीरज नाहिं धरौं री ।
जाउं नहीं जहं रहैं स्याम धन,
निरखत इक टक तैं न टरौ री ॥
सुनि री सखी ! दशा यह मेरी,
सौ कहि धौं अब कहा करौ री ।

सूर स्याम लोचन भरि देखौ,
कैसे इतनी साध भरीं री ॥

☆ ☆ ☆

हरि दरसन

हरि दरसन को साध मुई।
नड़ि ए उड़त फिरति नैनन संग,
फर फूटै ज्यों आक रुई ॥
जानौं नाहिं कहां तै आवति,
वह मूरति मन माहि उई।
बिन देखे की बिथा बिरहिणी,
अति जुर जरति न जाति छुई ॥
कछु वै कहति, कछु कहि आवत,
प्रेम पुलक रम स्वेद चुई।
सूखत सूर धान अंकुर सी,
दिन बरषा ज्यों मूज सुई ॥

☆ ☆ ☆

सुनि री सखी

सुनि री सखी ! दसा यह मेरी।
जब तैं मिले स्यामधन सुन्दर,
संगै फिरति भई जनु चेरी ॥

नीकें दरस देत नहीं सोकौं,
अंगन प्रति अंगन की ढेरी।
चपला-तैं अतिहि चंचल चित,
दसन चमक चकचौंधि घनेरी ॥
चमकत अंग, पीत पट चमकत,
चमकति माला मोतिन केरी।
सूर समझि विधना की करनी,
अति रिस करति सौंह मोहिं तेरी ॥

☆ ☆ ☆

आज के द्यौस

आज के द्यौस कौं अति नाहीं,
जौ लाख लोचन अंग अब होते।
पूरति साध मेरे हदै मांझ की,
देखत सबै छवि स्याम कीते ॥
चित लोभी नैन द्वार अतिहीं सुछम,
कहां वह सिंधु छवि है अगाधा।
रोम जितने अंग, नैन होते संग,
रूप लेती राख करति राधा।
श्रवन सुनि सुनि दहै, रूप कैसे लहै,
नैन कछु गहै, रसना न ताकै।

देखि कउ रहै, काउ सुनि रहे,
जीभा बिन, सो कहै कहा नहिं नैन जाको॥
अंग बिनु हैं सबै, ताकि एको फबै,
सुनत देखन जबै कहन लोरें।
कहै रसना, सुनत श्रवन, देखत नैन,
सूर सब भेद गुनि मनै तोरे॥

☆ ☆ ☆

कब री मिले

कब री मिले स्याम नहिं जानौं।
तेरी सौं करि कहति सखीरी अजहूं नहिं पहिचानौं॥
खिरक मिले, कै गौरस बेचत कै अबहीं कै कालि।
नैनन अन्तर होत न कबहूं, कहति कहारी आलि॥
एकौ पल हरि होत न न्यारे, नीकें देखे नाहिं।
सूरदास प्रभु टरत न टारे, नैनन सदा बसाहि॥

☆ ☆ ☆

प्रेम सहित

प्रेम सहित हरि तेरे आए।
कछु सेवा तै करी की नाहीं,
कै धौं वैसेहि उन्हें पठाये॥

काहे तैं हरि पाय संवारी,
क्यों पीताम्बर सीस फिराए।
गुप्त भाव तोसों कछु कीन्हौ,
घर आये काहे बिसराये॥
अतिहीं चतुर कहावति राधा,
बातन हीं हरि क्यों न भुराये।
सूर श्याम कौं बस करि लेती,
काहें कौं रहते पछिताये॥

☆ ☆ ☆

मन मेरौ हरि

मन मेरौ हरि संग गयौ री।
द्वारे आइ श्याम घर सजनी,
हंसि मो मन तिहि संग लयौ री॥
ऐसैं मिल्यौ जाइ मोकौ तजि,
मानौ उनही पोषि जियौ री॥
सेवा चूक परी जो मोतैं,
मन उनकौ धौं कहा कियो री॥
मोकौं देखि रिसात कहत यह,
तेरे जिय कछु गरब भयो री॥

सूर श्याम छवि अंग लुभान्यौ,

मन वच करम मोहि छांड़ि दयौ री ॥

☆ ☆ ☆

माखन की चोरी

माखन की चोरी तैं सीखे,

करन लगे अब चित्त की चोरी ।

जाकी दृष्टि परें नन्द नन्दन,

फिरत सु गोहन डोरी डोरी ॥

लोक लाज, कुल कानि मेटि कै,

बन बन डोलति नवल किसोरी ।

सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि,

देखत निगम बानि भई भोरी ॥

☆ ☆ ☆

नंदनंदन देखो माई

नंदनंदन मुख देखो माई ।

अंग-अंग छवि उगे मनहुं रवि ससि अरू समर लजाई ॥

खंजन मीन कुरंग भृंग बारिज पर अति रुचि पाई ।

स्त्रुति मंडल कुंडल बिबिमकर बिलसत मदन सहाई ॥

कंठ कपोत कीर विद्रुम पर दारिम कननि चुनाई ।

दुइ सारंग बांह पर मुरली आई देत दोहाई ॥

मोहे थिर चर बिटप बिहंगम व्योमविमान थकाई ।

कुसुमांजुलि बरसत सुर ऊपर सूरदास बलि जाई ॥

☆ ☆ ☆

लाखा-गृते जरत पांडु सुत बुद्धि बल नाथ उबारे ।

सूरदास प्रभु अपने जन के नाना त्रास निवारे ॥

☆ ☆ ☆

तुम मेरी राखो

तुम मेरी राखो लाज हरी ।

तुम जानत सब अन्तरयामी, करनी कुछ न करी ॥

औगुन मोसे विसरत नाहीं, पल छिन घरी घरी ।

सब प्रपञ्च की पोट बाँधिकै अपने शीश धरी ॥

दारा-सुत-सुन मोह लिए हैं, सुधि बुधि सब बिसरी ।

सूर पतित को वेग उधारो, अब मेरी नाव भरी ॥

☆ ☆ ☆

लालन तेरे मुख

लालन तेरे मुख पर हौं वारी ।

लट लटकन मोहित मसिदिं का तिलक भाल सुखकारी ।

मनहुं कमल अलि सावक पंगति उड़त मधुर ,

छवि भारी लोचन कलितकपोल कपोलनि ।

काजर छवि उपजत अधिकारी ।

मुखसन मुख और रुचि बाढ़ति हँसत दैदै किलकारी ।

अल्प सदन कलकल करि बोलनि, विधि नहिं परति विचारी ।
विकसति दुति अधरनि के बीच है, मानो विधु में बीजु उच्चारी ।
सुन्दरता को पार न पावती रूप देखि महतारी ।
सूरसिंधु की बूँद भई मिलि मति गति दीठि हमारी ॥

☆ ☆ ☆

बंदौ चरन

बन्दौं चरन सरोज तुम्हारे ।
जे पदपदुम सदा सिव के धन,
सिन्धु सुता उर तें नहिं टारे ॥
जे पदपदुम परसि ऋषि-पत्नी,
बलि, नृप, व्याध-पतित बहु तारे ।
जे पदपदुम रमत वृन्दावन,
अहि, सिर धरि अगनित रिपु मारे ।
जे पदपदुम परसि ब्रज, भागिनि,
सरबस दै सुत सदन बिसारे ।
जे पदपदुम रमत पांडव-दल,
दूत भये सब काज सँवारे ।
सूरदास तेई पद पंकज,
त्रिविध ताप दुख-हरन हमारे ॥

☆ ☆ ☆